# ‘बेहद’ धारावाहिक की प्रस्तुति एवं दर्शकों के अन्तर्मन पर प्रभाव

शोध सारांश

(एम. फिल. उपाधि हेतु)

**सत्र: 2016-17**

**ज्ञान शांति मैत्री**


**शोध निर्देशक**

**डॉ. धरवेश कठेरिया**

**(सहायक प्रोफेसर)**

जनसंचार विभाग

**शोधार्थी**

**अविनाश त्रिपाठी**

एम. फिल. जनसंचार

पंजीकरण सं.- 2016/05/208/001



**जनसंचार विभाग**

**मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ**

**महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय**

**Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya**

(A Central University Established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

Gandhi Hills, Wardha- 442001 (Maharashtra), India.

# शोध-सारांश

टेलीविज़न के आगमन के साथ ही उस पर मनोरंजन हेतु बहुत से कार्यक्रम भी प्रस्तुत होने लगे। धारावाहिक भी उन्हीं कार्यक्रमों में से एक है। धारावाहिक की लोकप्रियता टेलीविज़न पर प्रस्तुत होने वाले अन्य कार्यक्रमों की तुलना में बहुत ज्यादा है। भारत में टेलीविज़न का विकास, भारत में फैली अशिक्षा और अंधविश्वास को दूर करने एवं जागरुकता फैलाने के उद्देश्य को लेकर हुआ।

भारत में धारावाहिकों के सफर की शुरुआत 'हम लोग' धारावाहिक से 7 जुलाई 1984 को दूरदर्शन चैनल पर होती है। दूरदर्शन पर एक धारावाहिक से शुरू हुआ ये सफर आज अनगिनत चैनलों के सहारे उसके सैकड़ों धारावाहिकों की प्रस्तुति प्रतिदिन दे रहा है। उसका सफर तमाम उतार-चढ़ावों के साथ जारी है। भारतीय टेलीविज़न पर प्रस्तुत धारावाहिक 'हमलोग' (1984) 'बुनियाद' (1986) 'रामायण' (1987) 'महाभारत' (1988) 'भारत एक खोज' (1988) 'नीम का पेड़' (1991) आदि आज भी एक आदर्श प्रतिमान के रूप में उपस्थित हैं। समय के साथ इनके रूप और उद्देश्य में परिवर्तन आया है।

11 अक्तूबर 2016 से रात 9 बजे सोनी टीवी पर बेहद नाम से एक धारावाहिक प्रसारित हो रहा है। धारावाहिक में एक नायक और दो नायिकाओं के नायक से प्यार को आधार बनाया गया है। धारावाहिक मध्यम परिवार से शुरू होकर उच्च वर्ग तक जाने की ललक लिए नायक को दिखाता है जिसका फायदा नायक की बॉस उठाती है। नायक की बॉस यानि माया को अपने पैसों और रुतबे का बहुत घमंड है। वह पैसों के नशे में चूर होकर हर काम को बहुत ही टशन में करती हुई दिखाई पड़ती है। वह कर्मचारियों की जरा-सी गलती पर उन्हें नौकरी से निकाल फेंकती है और हमेशा अपनी छवि को नकारात्मक बनाए रखती है। उसे धारावाहिक के नायक अर्जुन से प्यार हो जाता है। जिसके बाद वह सामाजिक मान्यताओं और सामाजिक नियम क़ानूनों को ताक पर रख देती है। जो इस धारावाहिक की सबसे बड़ी खामी है।

## शोध की प्रासंगिकता

शोध विषय- **'बेहद' धारावाहिक की प्रस्तुति एवं दर्शकों के अन्तर्मन पर प्रभाव** को केंद्र में रखते हुए बेहद धारावाहिक की प्रस्तुति का दर्शकों के मन पर पड़ने वाले प्रभाव को रेखांकित किया गया है। आज धारावाहिक घरों में मजबूत पकड़ बना चुके हैं। गृहिणी हो या युवती अक्सर उनके अंदर धारावाहिकों के प्रति एक ललक होती है, जिसे आसानी से महसूस किया जा सकता है। धारावाहिक के प्रसारण के समय तक या तो वो अपना सारा काम खत्म कर लेती हैं या फिर काम छोड़ कर या करते-करते ही वो उसे देखती हैं। मनुष्य की प्रवृत्ति है कि वो जैसा देखता है, वैसा ही आचरण करता है। ऐसे में भारतीय घरों में मजबूती से पैठ बना चुके धारावाहिक कैसी सामग्री परोस रहे हैं? उसका अवलोकन अति आवश्यक हो जाता है। आज के समय में धारावाहिक की प्रस्तुति का अवलोकन अति प्रासंगिक हो जाता है। दर्शक उसे लेकर क्या विचार रखते हैं? यह जानना भी आज के समय में लाजमी है।

## शोध का उद्देश्य

शोध कार्य हेतु विषय-**'बेहद' धारावाहिक की प्रस्तुति एवं दर्शकों के अन्तर्मन पर प्रभाव** में शोध के निम्न उद्देश्य हैं -

- 'बेहद' धारावाहिक की प्रस्तुति का मनोविज्ञान का अध्ययन।
- टेलीविज़न में 'बेहद' धारावाहिक की उपस्थिति का अध्ययन।
- 'बेहद' धारावाहिक की प्रस्तुति का अवलोकन करना।
- 'बेहद' धारावाहिक के दर्शकों के अन्तर्मन पर प्रभाव का अध्ययन।

## शोध उपकल्पना

शोध कार्य हेतु विषय-**'बेहद' धारावाहिक की प्रस्तुति एवं दर्शकों के अन्तर्मन पर प्रभाव** में निम्न बिंदु उपकल्पना के रूप में हैं -

- बेहद धारावाहिक का प्रस्तुतिकरण पुराने धारावाहिकों के प्रस्तुतिकरण के स्वरूप को बदल रहा है।
- बेहद धारावाहिक समाज में नकारात्मकता को बढ़ावा दे रहा है।
- बेहद धारावाहिक समाज में स्थापित मान्यताओं और संस्कृति को चुनौती दे रहा है।
- बेहद धारावाहिक दर्शकों को भ्रमित कर रहा है।

## शोध क्षेत्र एवं उसकी सीमाएं

शोध विषय- **'बेहद' धारावाहिक की प्रस्तुति एवं दर्शकों के अन्तर्मन पर प्रभाव** को ध्यान में रखते हुए एवं शोध को स्वरूप देने के लिए सोनी चैनल पर प्रसारित धारावाहिक 'बेहद' के आरंभिक 20 एपिसोड का चयन किया गया है। शोध में धारावाहिक को विभिन्न मानदंडों पर रखकर उसके एपिसोड का अध्ययन किया जाएगा। धारावाहिक के प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए शोध क्षेत्र के रूप में नागपुर के शहरी क्षेत्र के 100 प्रतिभागियों को शामिल किया गया है।

## शोध प्रविधि

प्रस्तावित शोध कार्य हेतु विषय- **'बेहद' धारावाहिक की प्रस्तुति एवं दर्शकों के अन्तर्मन पर प्रभाव** में उपयोग की गई प्रविधि इस प्रकार है-

- **अवलोकन**
- **अंतर्वस्तु विश्लेषण**
- **निदर्शन**

**शोध उपकरण**

- **प्रश्नावली**
- **अनुसूची**

## अध्यायवार संक्षिप्त विवरण

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध 'बेहद' धारावाहिक की प्रस्तुति एवं दर्शकों के अन्तर्मन पर प्रभाव को पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है। अध्यायों का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है-

### अध्याय एक: शोध प्रारूप

अध्याय एक में शोध विषय से संबंधित विभिन्न प्रकार की जानकारी और पक्ष का विवरण प्रस्तुत किया गया है। इस अध्याय में शोध के लिए प्रयोग में लाई गई प्रविधियों के साथ-साथ शोध क्षेत्र एवं उसकी सीमाएं, शोध की प्रासंगिकता, शोध का उद्देश्य, शोध उपकल्पना एवं शोध उपकरण की चर्चा की गई है।

### अध्याय दो: भारत में टेलीविजन धारावाहिक

प्रस्तुत अध्याय तीन उप-अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रथम उप-अध्याय 'टेलीविज़न उद्भव एवं विकास' में टेलीविज़न के उद्भव से लेकर आज तक के उसके सफर को दर्शाया गया है। द्वितीय उप-अध्याय 'धारावाहिक उद्भव एवं विकास' के अंतर्गत विश्व में धारावाहिक के उद्भव की परिकल्पना एवं धारावाहिक के विकास को रेखांकित किया गया है। तृतीय उप-अध्याय 'धारावाहिक कल, आज और कल' में धारावाहिक के भूत, वर्तमान और भविष्य काल की स्थितियों पर चर्चा की गई है।

### अध्याय तीन: 21वीं सदी में धारावाहिकों का बदलता स्वरूप

प्रस्तुत अध्याय को चार उप-अध्यायों में बांटकर अध्याय के उद्देश्य को स्पष्ट किया गया है। प्रथम उप-अध्याय 'धारावाहिक: भारतीय संस्कृति और समाज' के तहत भारतीय संस्कृति एवं समाज को केंद्र में

रखते हुए धारावाहिक पर विस्तृत चर्चा की गई है साथ ही भारतीय संस्कृति और आज के धारावाहिकों के बीच के सामंजस्य को भी प्रस्तुत अध्याय में उकेरा गया है। द्वितीय उप-अध्याय 'धारावाहिक के सामाजिक पहलू' में धारावाहिक भारतीय समाज के प्रति कैसी संवेदना रखता है? को स्पष्ट किया गया है। तृतीय उप-अध्याय '21वीं सदी और टेलीविज़न धारावाहिक' में वर्तमान के धारावाहिक अपनी प्रस्तुति को भारतीय समाज में किस तरह से प्रस्तुत कर है? इस पर प्रकाश डाला गया है। चतुर्थ उप-अध्याय '21वीं सदी में टेलीविज़न धारावाहिक का विस्तार' को केंद्र में रखते हुए वर्तमान में टेलीविज़न धारावाहिक के विषय विस्तार और उसके क्षेत्र को विस्तार से दर्शाया गया है।

**अध्याय चार: 'बेहद' धारावाहिक का सामाजिक प्रभाव**

टेलीविज़न एक जनमाध्यम है उस पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम समाज में अपनी एक विशेष उपस्थिती रखते हैं इन्हीं सब विषयों को केंद्र में रखते हुए इस अध्याय में उन पर चर्चा की गई है।अध्याय चार को चार उप-अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम उप-अध्याय ''बेहद' धारावाहिक का परिचय' में बेहद धारावाहिक का पूरा परिचय और उसकी कहानी को इसमें दर्शाया गया है। द्वितीय उप-अध्याय 'समाज में 'बेहद' धारावाहिक का प्रभाव' के अंतर्गत बेहद धारावाहिक के समाज पर पड़ने वाले प्रभाव को विभिन्न तथ्यों के माध्यम से दर्शाया गया है। तृतीय उप-अध्याय 'सोनी टेलीविज़न चैनल में 'बेहद' धारावाहिक की प्रस्तुति' में बेहद धारावाहिक की प्रस्तुति को रेखांकित किया गया है। चतुर्थ उप-अध्याय 'दर्शकों के अन्तर्मन पर 'बेहद' का प्रभाव' में बेहद धारावाहिक का उसके दर्शकों के ऊपर कैसा प्रभाव पड़ा? इस पर प्रकाश डाला गया है।

**अध्याय पाँच: तथ्यों का संकलन, विश्लेषण और प्रस्तुतीकरण**

अध्याय पाँच 'तथ्यों का संकलन, विश्लेषण और प्रस्तुतीकरण' में बेहद धारावाहिक के प्रथम बीस एपिसोड का विश्लेषण, प्रस्तुतिकरण किया गया है। इसके साथ ही शोध क्षेत्र नागपुर से बेहद धारावाहिक के दर्शकों से प्रश्नावली/अनुसूची के माध्यम से प्राप्त आकड़ों का संकलन विश्लेषण एवं ग्राफ के माध्यम से उनका प्रस्तुतिकरण भी किया गया है।

## निष्कर्ष एवं सुझाव

निष्कर्ष एवं सुझाव नामक अध्याय में उपरोक्त अध्यायों के आधार पर निष्कर्ष लेखन के कार्य के साथ कुछ सुझाव भी दिए गए हैं।

### निष्कर्ष

- बेहद धारावाहिक में जरुरत से ज्यादा नकारात्मकता को प्रस्तुत किया गया है।
- धारावाहिक की कहानी को ऐसा प्रस्तुत किया गया है जिससे कि एक भ्रम की स्थिति उत्पन्न होती है।
- बेहद धारावाहिक ने अपने दर्शकों को भ्रमित करने का भी कार्य किया।
- बेहद धारावाहिक की प्रस्तुति को दर्शकों ने पसंद किया।
- कहानी, सेट और पात्रों को धारावाहिक में एक अलग अंदाज में पेश किया गया जिससे कि उसमें फिल्म का अनुभव हो। इस मायने में भी यह धारावाहिक अन्य धारावाहिकों से अलग था।
- बेहद धारावाहिक ने दर्शकों के मन में डरावने विचार पैदा कर उन्हें प्रभावित किया।
- धारावाहिक में पिता-पुत्री के स्नेह और सौम्यता वाले रिश्ते को एक डरावने और बीभत्स रूप में प्रस्तुत किया।
- बेहद धारावाहिक के संवाद हमारी सभ्यता और संस्कृति को प्रभावित करने वाले हैं।
- माया की माँ को शराब पीते दिखाने से समाज में शराब पीने की लत में वृद्धि होगी।

## सुझाव

बेहद धारावाहिक के अध्ययन एवं विश्लेषण के उपरांत अग्रांकित सुझाव दिए जा सकते हैं-

- धारावाहिक का प्रसारण समाज में जागरुकता और सामाजिक सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए होना चाहिए। इसलिए धारावाहिकों के प्रसारण में इस तरह के संदेश को प्रसारित करने की आवश्यकता है।
- बेहद धारावाहिक में जरूरत से ज्यादा नकारात्मकता को प्रस्तुत किया गया जो सही नहीं है इससे समाज में भ्रामकता का निर्माण होता है इस तरह की कहानी के प्रसारण से पहले उनके स्क्रीनिंग की आवश्यकता है।
- धारावाहिकों में शराब या किसी भी प्रकार के नशे की लत को किसी भी स्थिति में दिखाने पर प्रतिबंध होना चाहिए।
- धारावाहिक के संस्कृति और सभ्यता के उत्थान की बात हो न कि उन्हें नीचा दिखाने की।
- धारावाहिक में न्याय और कानून व्यवस्था को सुदृढ़ दिखाना चाहिए नहीं तो अपराधियों का मनोबल बढ़ता है।
- धारावाहिकों के पात्रों के द्विअर्थी संवाद बोलने पर लगाम लगाना चाहिए।
- इस तरह के धारावाहिकों का प्रसारण समय प्राइम टाइम से हट कर होना चाहिए।
- धारावाहिकों के लिए भी सेंसर की आवश्यकता है।

# Research Summary

## The Presentation and the Impact of the ‘Behad’ serial on the Viewers’ Mind

With the advent of the television, many programs were also offered for entertainment on it. The serial is also one of those programs. The popularity of the serial is much more than the other programs on television. The development of television in India, aimed at removing illiteracy and superstition in India and spreading awareness.

The journey of serials in India starts on the Doordarshan channel from 'Hum Log' serial on July 7, 1984. Starting with a serial on Doordarshan, the journey today is giving the presentation of hundreds of serials everyday with the help of countless channels. The television serial forwarding from’ ‘Hum Log’ ‘Ramayana’ (1987) 'Bharat Ek Khoj' (1988) 'Mahabharata' (1988) and 'Neem Ka Ped' (1991), etc., in beginning time the aims of the television serial was the ideal form of pattern. Over time, their form and purpose have changed.

From 11th October 2016 at 9 pm, a serial is being broadcast on the ‘Behad’ name of Sony TV. In the serial, a hero and two heroines has been made the basis of love. The serial starts from the middle family and shows the hero to the halo to go to the upper class, whose advantage raises by the boss of the hero. The hero's boss Maya is very proud of his money and status. She is seen madness in money and she has done all the work in a lot of tension. She throws them out of the job on a slight mistake of the employee and always keeps her image negative. She is loved by Arjun, who is the

hero of serial. After that she has breaked the social beliefs and social rules. Which is the biggest drawback of this serial.

## Relevance of research

Research Topics: “The Presentation and the Impact of the ‘Behad’ Serial on the Viewers’ Mind.” I have tried to show specific characteristic of this serial. Today there have been strong hold of television serial in the homes. Housewife or a young woman often has a glimpse of in the serials, which can be easily seen. By the time of the serial's broadcast, either they finish their entire work or leave the work or do it as soon as they see it. The tendency of a human being that he looks like and behaves like that. In this way, what kind of serials are being made in the Indian homes? His observation becomes very necessary. Today's observation of the serial's presentation becomes very relevant. What do viewers think about it? Knowing this also is indispensable in today's time.

## Purpose of research

The following research subject of “The Presentation and the Impact of the ‘Behad’ Serial on the Viewers’ Mind” contains specific objectives.

• Psychological study of the 'Behad' serial’s presentation.

• Study of the presence of 'Behad' serial’s in television.

• To observe the presentation of 'Behad' serial.

• Study of the impact of the 'Behad' serial on viewers'.

## Hypothesis

The following research subject of "The Presentation and the Impact of the 'Behad' Serial on the Viewers' Mind" contain specific research hypothesis.

• The presentation of the 'Behad' serial is changing the format of the presentation of the old serials.

• Highly promotes negativity in the society by the serial.

• Highly challenged established by the serial to the beliefs and culture of society.

• Highly misleading happen by the serial to the viewers.

## Research area and its boundaries

Research Topics: "The Presentation and the Impact of the 'Behad' Serial on the Viewers' Mind" In order to keep an eye on the impact of 'Behad' serial on viewers' the initial 20 episodes of the serial 'Behad' has been selected on the Sony channel. In the research, the episode will be studied by placing serial on different criteria and aspects. In order to evaluate the effect of the serial, 100 participants of the urban area of 'Nagpur' have been included as research area.

## Research method

Research Topics: "The Presentation and the Impact of the 'Behad' Serial on the Viewers' Mind" having many method and technique following-

• Observation
• Content Analysis
• Sampling

## Research Instrument

• Questionnaire

• Schedule

## Chapter wise overview

Presentation of Short Dissertation Research Topics: "The Presentation and The Impact of the 'Behad' Serial on the Viewers' Mind" has been divided into five chapters. The brief description of the chapters is as follows-

## Chapter One: Research Format

In chapter one, various types of information related to the research topic and the details of the aspects have been presented. In this chapter, the research methodology and its limitations, the relevance of research, the purpose of research, the research concepts and research tools have been discussed along with the methods used for research.

## Chapter Two: Television Serials in India

The chapter presented is divided into three sub-chapters. The first sub-chapter 'Television Emergence and Development' depicts its journey from the emergence of television to the present. Under the second sub-chapter 'Serial Evolution and Development', the evolution of the serial and the evolution of the serial in the world has been underlined. Third sub-chapters 'Serial Yesterday, Today and Tomorrow' discusses the past, present and future times of the serial.

## Chapter Three: The Changing Form of Serials in the 21st Century

The purpose of the chapter is explained and dividing the in four sub-chapters. Under the first sub-chapter 'Serial: Indian Culture and Society', there has been a detailed discussion on serials keeping Indian culture and society at the center, as well as harmony between Indian culture and today's serials has been engraved in the chapter presented to them. What is the sympathy for the serial in Indian society is being described by the second sub-chapter 'The social aspect of the serial?' In the third sub chapter episode '21st Century and Television Series', how is the current serial presenting its presentation in Indian society? This has been highlighted. Fourth Sub-Chapter 'Detail of the television series in the 21st Century' is currently shown in detail by expanding the theme of the television serial and its area.

## Chapter Four: The Social Impact of the 'Behad' Serial

Television is a medium to broadcast programs in the society. This Fourth chapter has been divided into four sub-chapters. The first sub chapter "The Introduction of the ‘Behad’ Serial", the very introduction of the serial and its story are depicted in it. In the second sub-chapter under the influence of ‘Behad’ serial effect on the society. The impact of the ‘Behad’ serial on society has been shown through various facts. The third sub chapter, under the "Sony Television Channel", has been highlighted in the series of "Serial Performance" in the ‘Behad’ serial. The fourth sub-chapter 'How did the impact of the' Behad 'serial on the audience and spectators? This has been highlighted.

## Chapter Five: Data collection, Analysis and Presentation of the facts

In this chapter number five, 'collecting, analyzing and presenting the facts', the initial first 20 episodes of the serial has been analyzed and presented. Along with this, the data received through the questionnaires/schedule from the serial's audience and spectators from the research area, “Nagpur”. The data has been also analyzed and presented through graph.

## Conclusion and Suggestion

In the chapter titled ‘Conclusions and Suggestions’ some conclusion and suggestions have also been given with the work of writing on the basis of the above chapters

## Conclusion

• High negativity has been presented in the serial ‘Behad’ above than needs.

• The story of the serial has been presented so that an illusion arises.

• ‘Behad’ serial have also worked to confuse their viewers.

• The viewers of the serial's have liked its presentation.

• The story, set and characters were presented in a different style in the serial so that they have experience in the movie. In this sense, this serial was different from other serials.

• The ‘Behad’ serial to be success creating scary thoughts in viewers' minds and influenced by its.

• In the ‘Behad’ serial, the relationship between father and daughter's affection and mildness was presented in a scary and obscene form.

• In the ‘Behad’ serial dialogues are being badly affected our civilization and culture.

• Due to the illusion of Maya's mother drinking alcohol addiction in society will increase.

## Suggestion

After extensive study and analysis of serials, advanced suggestions can be given-

• Broadcasting of the serial should be to promote awareness and social security in the society. Therefore, there is a need to broadcast such messages in the transmission of serials.

• The excessive negativity presented in excessive serials, which is not correct, leads to confusion in the society. Such a story requires screening before it can be broadcast.

• There should be restrictions fixed on showing alcohol or any kind of addiction in serials in any situation.

• It is a matter of the upliftment of the culture and civilization of the serials and not the lowering of them.

• In the serial, justice and law system should be strengthened; otherwise the morale of the criminals increases.

• The characters of the serials should curb the two-dimensional dialogue.

• Broadcast time of these types of serials should be removed from prime time for other.

• A sensors committee is also required for serials.